INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 2 | MARCH – 2025

नगरीय अधिवास के विकास का अध्ययन : सतना जिला के विशेष सन्दर्भ में

कृष्ण कुमार साकेत
शोधार्थी भूगोल
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

डॉ. दिनेश प्रसाद मिश्र
सहायक प्राध्यापक भूगोल
इन्द्रा स्मृति महाविद्यालय, न्यू रामनगर, सतना (म.प्र.)

सारांश –

यह शोध पत्र सतना जिले में नगरीयकरण की प्रक्रिया और उसके सामाजिक, आर्थिक तथा पर्यावरणीय प्रभावों का विश्लेषण करता है। इस अध्ययन में यह देखा गया कि सतना जिले में शहरीकरण के कारण आर्थिक विकास में वृद्धि, रोजगार के अवसरों का विस्तार और बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ है। हालांकि, इसके साथ ही आवास की कमी, सामाजिक असमानताएँ और पर्यावरणीय दबाव जैसी समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। शहरीकरण के चलते गाँवों से शहरों में प्रवासन बढ़ा और औद्योगिकीकरण और व्यापार में भी वृद्धि हुई। लेकिन शहरी विकास के असमान वितरण और संसाधनों की कमी ने नगरों में अव्यवस्थित विकास को जन्म दिया।

मुख्य शब्द – नगरीयकरण, सामाजिक, आर्थिक, पर्यावरणीय एवं शहरीकरण।

प्रस्तावना –

ग्रामीण बस्तियों की अधिकांश जनसंख्या जीवन निर्वाह के प्राथमिक व्यवसाय जैसे कृषि, पशुपालन, मछली पकड़ना आदि से सम्बन्धित रहती है जबकि नगरीय बस्तियों में द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थक श्रेणी के व्यवसाय किये जाते हैं, जैसे कृषि, पशुपालकों द्वारा उत्पादित प्राथमिक सामग्रियों का उपयोग उद्योग में करते हैं। तैयार माल को स्थानीय, जिला प्रदेश तथा देश की बाजारों में बेचते हैं। नगरीय क्षेत्र वाणिज्य, व्यापार, उद्योग, परिवहन, प्रशासन, सुरक्षा, शिक्षा, संस्कृति, मनोरंजन एवं पर्यटन केन्द्रों के रूप में विकसित होते हैं।

नगरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा ग्रामीण जनसंख्या नगरीय जनसंख्या में बदल जाती है। यह एक निश्चित अवधि में ग्रामीण समाज का नगरीय समाज में रूपान्तरण तथा नगरों में रहने वालो की संख्या में वृद्धि से है। प्रत्येक नगर का ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्ध होता है और उस नगर का प्रभाव अपन बाहर चारों ओर के क्षेत्र में व्याप्त रहता है। देहात के लोग नगर में नौकरी करने, मजदूरी करने तथा शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं। इस प्रकार नगर और गाँव का परस्पर सम्बन्ध रहता है। भारतीय सभ्यता में नगरीकरण के प्रमाण आज से लगभग 5500 वर्ग पूर्व सिन्धु घाटो सभ्यता के मोहन जोदड़ों और हड़प्पा से जुड़े हैं, ये नगर उस काल में सुव्यवस्थित नगर विन्यास का प्रदर्शन करते हैं। इन नगरों का व्यापारिक सम्बन्ध समुद्र पार मेसोपोटामिया तथा मिश्र से था।

वैदिककाल में आर्यों के आगमन से नगरों का विकास गंगा–सिंधु के मैदान में हुआ। ये नगर भी परिवहन एवं अन्य सुविधाओं को ध्यान में रखकर अधिकतर नदियों के किनारे स्थापित किये गये थे, ऐसे प्राचीन नगर कुरुक्षेत्र, इन्द्रप्रस्थ, थानेश्वर, मिथिला, अयोध्या, हरिद्वार, द्वारिका, काशी, गया आदि महत्वपूर्ण नगर थे, इन नगरो के विन्यास का आधार धार्मिक, सांस्कृतिक तथा वाणिज्य था। धीरे–धीरे आर्यों एवं अनार्यों के बीच समन्वय स्थापित होता गया और ऐतिहासिक काल में सभ्यता और संस्कृति का विकेन्द्रीकरण पूर्व में खिसकता गया। 'मगध' राजनीति के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में विकसित हुआ। मौर्य काल से गप्त काल तक 'पाटली पुत्र'' राजनैतिक, प्रशासनिक, सांस्कृतिक तथा व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित महानगर था। तक्षशिला तक इसे राजमार्ग से जोड़ा गया तथा इस काल में राजगृह नालन्दा, मथुरा, प्रयाग, काशी, तक्षशिला, उत्तर भारत के तथा मध्य एवं दक्षिणी भारत में कांची, सांची, उज्जैन, जयपुर, तन्जौर, झांसी, चम्पा, मैसूर तथा मथुरा महत्वपूर्ण नगर थे।

मध्यकाल में मुसलमानों के अधिपत्य से प्राचीन कुछ महत्वपूर्ण नगरों का ह्रास हुआ। इस काल में सैनिक एवं प्रशासनिक उद्देश्यों को लेकर दिल्ली, आगरा, दौलतावाद, जौनपुर, फिरोजपुर तथा सहारनपुर जैसे नगरों का महत्व बढ़ा। मुगलकाल में विशेषकर अकबर एवं शाहजहाँ के काल में नगरीयकरण को बल मिला। अनेक नये नगरों की उत्पत्ति हुई तथा पुराने नगर समृद्ध होने लगे। ''आगरा'' इस काल में विश्व के समृद्ध नगरो में था। इसके अतिरिक्त फतेहपुर सीकरी, फिरोजाबाद, मथुरा, फैजाबाद, मेरठ, सहारनपुर, लखनऊ, इलाहाबाद, सहसाराम, गोलकुण्डा, बीजापुर, औरंगाबाद जैसे नगरों का विकास एवं स्थापना हुई।

मराठाकाल में शिवाजी के नेतृत्व में नये सैनिक नगरों का निर्माण हुआ तथा कुछ पुराने नगरों का विकास किया गया। इन नगरो में इन्दौर, ग्वालियर, देवास, नागपुर, धार, पूना प्रमुख हैं। मुगलो के अन्तिम काल में भारत में पुर्तगाली, फ्रांसीसी तथा अंग्रेज व्यापारियों का आगमन हुआ एवं उन्होंने तटवर्ती बन्दरगाह नगर जैसे गोवा, कालीकट तथा पाण्डिचेरी नगर बसाये गये। अंग्रेजों ने सन् 1690 ई. में कलकत्ता नगर को जन्म दिया जो 18वीं शताब्दी तक देश का महानगर बन गया। गंगा मैदान में उद्योग के आधार पर कानपुर को बसाया। इन्होने अनुकूल जलवायु एवं परिस्थिति के अनुसार पहाड़ी नगरों को बसाया जैसे शिमला, दार्जिलिंग, देहरादून, मंसूरी, नैनीताल, शिलांग, उटकमण्ड, रांची आदि। ब्रिटिशकाल में उद्योग धन्धे, खानों, समुद्री परिवहन, रेलवे यातायात के विकास से नये नगरों की स्थापना हुई तथा पुराने नगरों का विकास हुआ जैसे जगशेदपुर, धनवाद, अहमदावाद, दानापुर, जमालपुर आदि।

विश्लेषण –

भारत एवं विश्व के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के 5500 वर्षों के अध्ययन के दौरान नगरीय विकास के काल का सिंहावलोकन करने पर यह पाया गया कि 19वीं शताब्दी के पूर्व अधिकांश नगरों का विकास का आधार कृषि तथा उससे सम्बन्धित व्यापार तथा कुटीर उद्योग थे। कृषि में बचत कम और कुटीर उद्योगों में उत्पादन सीमित होने के कारण नगरवासियों के पास ग्रामीणों के साथ लेन–देन के लिए वस्तुओं की मात्रा बहुत सीमित थी तथा पिछले दो शताव्दियों में औद्योगीकरण तथा तकनीकी प्रगति ने बड़े पैमाने पर वस्तु निर्माण को सम्भव बनाया। कृषि उत्पादन में वृद्धि से बचत अधिक होने लगी जिससे नगरीकरण को प्रोत्साहन मिला, जिससे तीव्रगति से वृद्धि हुई।

वर्तमान सतना शहर की स्थापना रीवा राज्य के महाराजा रघुराज सिंह जूदेव ने वर्ष 1865 में ग्रेड इंडियन पेनिन सुरक्षा रेलवे (जी.आई.पी.आर.) के तत्वावधान में 1867–68 में रेल सेवा शुरू होने के बाद की थी। महाराजा रघुराज सिंह 1925 में मुख्तारगंज में प्रसिद्ध वेंकटेस मन्दिर की आधार शिला रखी है अर्थात जिले का इतिहास के साथ–साथ नगरीकरण इतिहास भी बहुत प्राचीन है जिसमें मैहर, नागौद कोठी, जसो, सोहावल, रघुराजनगर आदि उस समय नगर के रूप में स्थापित हो चुके थे।

नगरीय अधिवास के प्रकार एवं प्रतिरूप –

जनसंख्या के आधार पर ही नगरो के आकार एवं सापेक्षिक अन्तराल का निर्धारण होता है। कुल जनसंख्या को आधार मानकर जिले की नगरीय अधिवासों को निम्नलिखित भागों में विभक्त कर अध्ययन किया गया है –

(1) अनुमार्गी बस्ती – किसी मार्ग के किनारे एक या एक से अधिक दुकाने आने–जाने वालो के लिए चाय नास्ता के लिए होती है तथा वाहनों के लिए छुटपुट तेल की सुविधा होती है, इसके अतिरिक्त होटल खाने पीने के लिए हो सकता है तो ऐसी बस्ती केन्द्रीय बस्ती या पुरवा बस्ती कहलाती है। इस प्रकार की बस्तियों का विस्तार जिले में लगभग 60 प्रतिशत गाँवो में फैले हैं।

(2) नगरीय पुरवा – नगरीय पुरवा जिसमें सामान्यतः 20 से 150 मनुष्यों की जनसंख्या होती है। नगरी पुरवा कहा जाता है। जिले में नगरीय पुरवा की संज्ञा दी गई है जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका में इसी संख्या को नगर की श्रेणी में रखा गया है। जिले में अधिकांशतः गाँवो की संख्या अधिक है जो इस श्रेणी में आते हैं।

(3) नगरीय गाँव – ग्रिफिथटेलर ने 150 से 500 व्यक्तियों वाले नगरीय गाँव को नगरीय गाँव माना है। ऐसी बस्तियों को ग्रामीण नगर बस्तियां कहते हैं। जिले एवं देश में नगरीय गाँव तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में इस प्रकार के गाँव मिलते हैं। जिले में अधिकांश इस प्रकार के नगरीय गाँवों की संख्या अधिकतर है तथा तहसील के बड़े–बड़े गाँव इस श्रेणी में आते हैं।

(4) शहर या कस्बा – शहर की श्रेणी में शहरों की या कस्बो की आबादी 500 से 10,000 तक व उससे अधिक हो तो उसे शहर या कस्बा कहते हैं। ग्रिफिथटेलर ने इतनी अधिक जनसंख्या वाले शहर को कलाइमेग्स शहर की संज्ञा दी है। किन्तु भूगोलवेत्ता 50,000 जनसंख्या को फलाईमेग्सशहर मानते है। जिले में शहर या कस्बे की श्रेणी में मुख्यतः 13 क्षेत्र शहर या कस्बे की श्रेणी में आते हैं जिनमें क्रमशः कोठी, माधवगढ़, चित्रकूट, मझगवाँ, बिरसिंहपुर, जैतवारा, नागौद, उचेहरा, रामपुर बाघेलान, कोटर, अमरपाटन, मैहर तथा रामनगर इस श्रेणी में आते हैं।

(5) नगर – 50,000 से अधिक के आबादी वाले क्षेत्र या संकेद्रण को नगर कहते हैं। परन्तु जब यह आबादी लगभग 10 लाख के समकक्ष हो जाती है तो उसे मीलियन सिटी कहते हैं। नगर की श्रेणी में जिले में नगर पालिक निगम ही इस श्रेणी के (नगर) शहर है।

(6) महानगर – इस श्रेणी के महानगर की आबादी 10 लाख या उससे अधिक जनसंख्या निवास करती है तथा उनकी स्थिति प्रादेशिक या व्यापारिक केन्द्रीय मण्डी की होती है। जिला महानगर की श्रेणी में नहीं आता है।

(7) सन्नगर – केन्द्रीय स्थिति तथा प्रादेशिक विशिष्टता की अनुकूल परिस्थियों में महानगर के निकट स्थित शहर या नगर आवास में मिलते चले जाते हैं। ऐसे कई नगरों के केन्द्रीय नगर के प्रभाव से मिलते तथा फैलते चले जाने की स्थिति को सन्नगर कहते हैं। केन्द्रीय नगर के नाम से ही उसे सम्बोधित करते हैं। इस श्रेणी के शहर जिले में उपलब्ध नहीं है। यदि हम एक छोटी इकाई के रूप में सम्मिलित कर केन्द्रीय स्थान को मानते है तो अन्य क्षेत्र भी सन्निकट होने से जिला मुख्यालय को इस श्रेणी में अध्ययन किया गया है।

(8) मेगापोलिस – इस श्रेणी के शहर की जनसंख्या 50,000 लाख से अधिक होती है, जिसे मेगापोलिस शहर कहते है। इस तरह के शहर उपलब्ध नहीं है।

उपरोक्त तथ्यों एवं नगर के प्रकारों का अध्ययन करने के पश्चात हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि प्रत्येक नगर का विकास एक छोटी बस्ती से होता है और धीरे–धीरे वह विकास के विभिन्न स्तरों शहर, नगर, महानगर तथा वृहद नगर तक की श्रेणी में आ जाते हैं।

नगर के विकास क्रम की अवस्थाएँ –

सतना जिले के नगरीय क्षेत्रों में विकास क्रमिक रूप से हुआ है। इसलिए नगरीय अधिवास की उत्पत्ति से लेकर विकास की चरम अवस्था तक की अवधि को विभिन्न विद्वानों ने विभिन्न अवस्थाओं में विभाजित कर अध्ययन किया है। जिनमें मुख्य रूप से गिडीस, ममफोड तथा ग्रिफिथटेलर महोदय के वर्गीकरण विशेष उल्लेखनीय हैं। अतः शोधार्थी ने ग्रिफिथटेलर द्वारा विभाजित विकास क्रम की अवस्थाओं का जिले में अध्ययन कर उनके द्वारा वर्गीकृत अवस्थाओं का वर्णन किया गया है–

1. पूर्व शैशवावस्था – नगर विकास की यह प्राथमिक अवस्था है जब किसी मार्ग के दोनो तरफ कुछ आवास तथा दुकाने होती हैं।

2. शैशवावस्था – इस अवस्था में सड़कों तथा गलियों का विकास होने लगता है। सड़कें तथा गलियाँ एक दूसरे को समकोण पर काटती हुई चौक पट्टी प्रतिरूप को आकार देती है। नगर के केन्द्र में दुकाने तथा बाहर

की ओर आवासीय माकानों की संख्या बढ़ने लगती है। इस अवस्था के शहर या कस्बे जिले में सर्वत्र पाये जाते हैं।

3. बाल्यावस्था – इस अवस्था में नगर के मध्य भाग (कोड) विस्तृत व्यापारिक क्षेत्र होता है। केन्द्र में केवल दुकाने होती है, मुख्य सड़कों के अतिरिक्त कई गलियाँ बन जाती हैं जिन पर आवासीय माकानों का निर्माण होता है। यह जिले के लगभग प्रायः सभी क्षेत्रो से इस अवस्था के शहर उपलब्ध हैं।

4 किशोरावस्था – इस अवस्था में नगर के बाह्य भाग की ओर नगर तेजी से बढ़ने लगता है। नयी–नयो इमारतें पुरानी इमारतों का रूप ग्रहण करने लगती हैं। औद्योगिक क्षेत्र, बाजार क्षेत्र अलग–अलग रूप से स्थापित हो जाते हैं। नगर का विस्तार बाहरी क्षेत्रों में भी होने लगता है। नगर पालिका, नगर पालिकायें नगर का प्रशासन करने लगती हैं। नगर समीपवर्ती क्षेत्र से केन्द्र स्थल क रूप में सेवा प्रदान करने लगती है। सतना जिले में इस तरह की सेवाओं के क्षेत्र मैहर, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, नागौद, चित्रकूट, रामनगर, उचेहरा, बिरसिंहपुर तथा मझगवाँ तहसील में चित्रकूट क्षेत्र इस श्रेणी मे आते हैं।

5. प्रौढ़ावस्था – प्रौढ़ावस्था में नगर के कर्मोपलसी क्षेत्र जैसे औद्योगिक क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र, प्रशासनिक क्षेत्र, आवासीय क्षेत्र अलग–अलग स्पष्ट दिखने लगते हैं। व्यापारिक मण्डिया, बैंक, थोक व्यापार केन्द्र भी स्थापित हो जाते हैं। स्कूल, कालेज तथा विश्वविद्यालय की स्थापना, मनोरंजन के सघन क्रीड़ास्थल, पार्क स्थलों का भी निर्माण हो जाता है। प्रशासकीय कार्यालय, चिकित्सा सेवाओं की भी सुविधा उपलब्ध हो जाती है। तथा परिवहन के साधन से अन्य बड़े शहर जुड़ जाते हैं। जिला मुख्यालय नगर भी इसी अवस्था की श्रेणी में आता है।

6. उत्तर प्रौढ़ावस्था – नगर के निर्माण में आधुनिक तकनीकी एवं प्लानिंग का प्रभाव देखने को मिलता है। पुरानी सड़को को चौड़ा किया जाता है। औद्योगिक, व्यापारिक, परिवहन, प्रशासनिक तथा आवासीय क्षेत्र सुव्यवस्थित ढंग से अलग एक दूसरे से अलग हो जाते हैं नई इमारतो का योजनाबद्ध तरीके से निर्माण होने लगता है तथा नगर का बसाव प्रतिरूप सुव्यवस्थित तथा आकर्षक हो जाता है। यह अवस्था नगर विकासक्रम की चरमावस्था मानी जाती है। नगर का विकास आसपास के ग्राम नगरीय क्षेत्र तक हो जाता है तथा प्रभाव क्षेत्र की सीमा बढ़ जाती है। इस अवस्था के नगर जिले में नही है।

7. वृद्धावस्था – इस अवस्था मे नगरों का ह्रास होने लगता है क्योकि नगर अपनी जीर्णावस्था को प्राप्त कर चुके होते हैं। जिले में सोहावल एवं माधवगढ़ इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।

वर्तमान समय में यह आवश्यक नही है कि कोई नगर इन सात अवस्थाओं से गुजर कर विकासक्रम को पूरा करे। वर्तमान या आधुनिक युग में तकनीक द्वारा पूर्व नियोजित प्लान बनाकर सड़कों का ग्रिड बनाकर बिजली और पानी की सुविधा उपलब्ध कराकर औद्योगिक क्षेत्र, व्यापारिक क्षेत्र, प्रशासनिक क्षेत्र एवं रिहायसी माकान बना दिये जाते हैं। आधुनिक तकनीकी एवं विज्ञान के युग में योजनाबद्ध तरीके से बिल्कुल नये नगरों को प्रौढ़ावस्था से युक्त बसा दिया जाता है। जैसे देश में भिलाई, चण्डीगढ़, तारापुर, राउरकेला, टाटानगर, सिन्डकी आदि जैसे नगर उपरोक्त सातों अवस्थाओं से नही गुजर रहे हैं बल्कि आधुनिक तकनीक एवं विज्ञान का प्रतीक है।

नगर के सेवा एवं प्रभाव क्षेत्र –

प्रत्येक नगर विभिन्न प्रकार के सेवा कार्यों का केन्द्र बिन्दु होता है। नगर सुनियोजित ढंग से बसाया गया है, अतः बिना योजना के उसमें भिन्न भिन्न कार्यो के लिए अलग अलग भवन होते हैं जैसे आवासीय भवन, प्रशासनिक कार्यालय, शिक्षण संस्थाएं, बाजार क्षेत्र, मण्डिया, कारखाने, मालगोदाम, कार्यशालाए, परिवहन के साधन, बसस्टैण्ड, रोडवेज कार्यालय, रेलवे स्टेशन, लोकोशेड की इमारत तथा धार्मिक केन्द्र, मंदिर, मस्जिद तथा गिरिजाघर और मनोरंजन के स्थान जैसे खेल के मैदान, स्टेडियम तथा पार्क आदि। सामान्यतः उपरोक्त सेवाओं के क्षेत्र भी अलग–अलग मिलते हैं। नगर चाहे औद्योगिक, व्यापारिक, प्रशासनिक, शिक्षा केन्द्र तथा धार्मिक केन्द्र हो उसमें अधिकांश के निमित्त भवन अलग–अलग बने हाते हैं। ये आपस में निकट या मिले जुले होते हैं। अतः जिस सेवा में कार्य की प्रधानता होती उस क्षेत्र को उसी सेवा कार्य के नाम से या कर्मोपलक्षीय क्षेत्र कहते हैं। सामान्यतः सतना जिले के नगरों में निम्नांकित सेवा क्षेत्र हैं–

1.आवासीय क्षेत्र – नगर में निवास करने वाले लोगों के आवासीय भवन अन्य कार्यों के क्षेत्रों से अलग होते हैं। नगर में स्वच्छ एवं खुले क्षेत्र निवास के लिए चयन किया जाता है, जो औद्योगिक क्षेत्र या फैक्ट्रियों से

अलग होते हैं। इस क्षेत्र में अधिकांश भवन केवल रहने के लिए निर्मित होते हैं। इस तरह के क्षेत्र नगर क ग्रामीण क्षेत्रो में पाये जाते हैं।

2.नगर केन्द्र – नगर केन्द्र में प्रायः दुकानों तथा व्यापारिक संस्थानों के भवन मिलते हैं। यह नगर का मध्य भाग होता है जो बाजार केन्द्र होता है और इसे चौक या (चौराहा) भी कहते हैं। इस श्रेणी में नगर के नगरीय क्षेत्र आते है।

3. औद्योगिक क्षेत्र – इस क्षेत्र में मुख्य रूप से कारखाने, मिल, पावार हाउस, कार्यशालाएँ आदि के भवन स्थिति होते हैं। औद्योगिक क्षेत्र प्रायः आवासीय क्षेत्र से दूर होते हैं जिसमें कारखाने की चिमनियों से निकलने वाला धुंआ से प्रदूषण न हो। इस क्षेत्र में छोटे–बड़े पैमाने के उद्योग धन्धे स्थापित होते हैं। जिले में इसका प्रत्यक्ष उदाहरण मैहर में बिरला सीमेन्ट उद्योग, के.जे.एस.सीमेन्ट, फैक्ट्री तथा रामपुर बाघेलान प्रिज्म एवं बाबूपुर में स्थित सीमेन्ट फैक्ट्री इसके उदाहरण है।

4.व्यापारिक क्षेत्र – नगर के जिस क्षेत्र में बैंक, बोमा, कम्पनियाँ तथा मण्डिया आदि मिलती है उसे व्यापारिक क्षेत्र कहते हैं, वे प्रायः जिले के तहसीलों में वहाँ की परिस्थितियों के अनुसार व्यापारिक सुविधा उपलब्ध है। जहाँ पर छोटे–छोटे ग्रामीण व कुटीर उद्योग स्थिति है।

5.बाजार क्षेत्र – नगर के दैनिक उपभोग की वस्तुओं की आपूर्ति के लिए नगर में बाजार क्षेत्र होता है जहाँ पर खाद्य सामग्री, फल तथा सब्जी, दूध, साबुन, मसाले, छोटे–छोटे मशीनी उपकरण तथा अन्य आवश्यक वस्तुएँ पास–पास सुविधा अनुसार सुलभ हो जाते हैं। इस तरह के बाजार क्षेत्र में तहसील या ब्लाक मुख्यालय तथा नगर पंचायत क्षेत्र में पाये जाते हैं।

6.प्रशासनिक क्षेत्र – नगर के एक क्षेत्र में सरकारी कार्यालय, कोर्ट कचहरी, पुलिस कार्यालय, डाकघर, टेलीफोन, नगर पंचायत कार्यालय तथा अन्य शासकीय कार्यालय के भवन होते हैं। जिला या तहसील के प्रशासनिक कार्यों का सम्पादन होता है। जिले में इस तरह के कार्यालय प्रत्येक तहसील एवं जनपद कार्यालय में ऐसे प्रशासनिक कार्यालय स्थित हैं।

7.परिवहन क्षेत्र – नगर में बस स्टैण्ड, रोडवेज, रेल्वे स्टेशन तथा लोकोसेड के लिए अलग–अलग क्षेत्र मिलता है। जिले में परिवहन सुविधा लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र में उपलब्ध है लोकोसेड रेल सेवा जिला मुख्यालय तथा रेल सुविधा, मैहर, भदनपुर, उचेहरा, सतना तथा जैतवारा क्षेत्र में रेल सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

8.धार्मिक क्षेत्र – नगर में धार्मिक स्थल जैसे मंदिर–मस्जिद, गिरजाघर अलग–अलग क्षेत्र में स्थिति होते हैं, जैसे जिले में माँ शारदा देवी मंदिर मैहर, मारकण्डेय आश्रम, व्यंकटेश्वर मंदिर, रामवन, गैवीनाथ मंदिर, सरभंगा आश्रम, धारकूड़ी तथा चित्रकूट जैसे पावन धार्मिक स्थल जिले के अलग–अलग क्षेत्र में स्थित हैं।

9.सामाजिक एवं मनोरंजन क्षेत्र – नगर में सार्वजनिक भवन जैसे सभा स्थल, पंचायत भवन, टाउन हाल, मेला स्थल, अस्पताल, आदि क्षेत्र के अतिरिक्त पार्क, सिनेमा, थियेटर, क्लब होटल आदि के लिए पृथक स्थान होते हैं, जिसका प्रत्यक्ष अवलोकन मैहर, सतना तथा चित्रकूट धाम जिले के उदाहरण हैं।

नगर के प्रभाव क्षेत्र –

प्रत्येक नगर का अपने चारो ओर के देहात से गहरा सम्बन्ध होता है। नगर अपने आस–पास के क्षेत्र की कुछ सेवाएँ उपलब्ध कराती है और बदले में उस क्षेत्र की सेवाएँ प्राप्त करता है। नगर के इस तरह के चारों ओर के इस क्षेत्र को अमलैण्ड कहा जाता है। नगर क्षेत्र का परिसीमन कई प्रकार की सेवाओं के आधार पर किया जाता है। प्रभाव क्षेत्र की सीमा नगर के आकार तथा उससे सम्पन्न होने वाली सेवाओं के महत्व पर निर्भर करती है। ग्रामीण नगर अपने आसपास के ग्रामीण क्षेत्र की दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं की पूर्ति करते हैं, इससे बड़े नगर अपनी सेवाओं का प्रभाव दूर दूर तक तथा महानगरो की सेवाएँ निकटवर्ती नगरों तक पहुँचती है। अतः छोटे नगरो की अपेक्षा बड़े नगरों का प्रभाव क्षेत्र अधिक बड़ा होता है।

सतना जिला विंध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक एवं धार्मिक एवं व्यापारिक औद्योगिक नगर है। यहाँ तक कि इसका महत्व भारत में कच्चामाल उद्योगों से उत्पादित वस्तुएँ और व्यापार की दृष्टि से भी माना गया है। धार्मिक महत्व की दृष्टि से माँ शारदा एवं चित्रकूट धाम जैसी पवित्र नगरी भी स्थिति है। इसके अतिरिक्त सीमेन्ट उद्योग भी स्थापित होने के कारण यहाँ पर थोक एवं फुटकर व्यापार का महत्वपूर्ण नगर है, जिसमें अत्यधिक संख्या में लोग प्रतिदिन चारों तरफ से बस एवं रेलमार्ग से आकर क्रय–विक्रय करते हैं। यह शिक्षा के क्षेत्र में भी

अपना महत्वपूर्ण अस्तित्व बनाये हुए हैं क्योकि यहाँ पर विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थाएँ तथा व्यापारिक संस्थाएँ केन्द्रित ह, जिसमें नगर एवं इसके पृष्ठ प्रदेश से विद्यार्थी अध्ययन करने हेतु आते हैं। इसके साथ ही यह नगर धार्मिक नगरी भी है जिससे देश के कोन–कोने से या विदेशों से भी लोग आकर भ्रमण करते हैं। इस नगर में चिकित्सा सुविधा शासकीय और अशासकीय तौर पर उपलब्ध हैं। नगर की राजनीति भी स्थानीय प्रशासन में विशेष छाप रखती है।

आसपास का परिक्षेत्र नगर को दैनिक उपभोग की वस्तुएँ जैसे सब्जी, फल, दूध तथा खोवा, खाद्य सामग्री, श्रमिक और कच्चा माल (खनिज पदार्थ) प्रदान करता है। प्राथमिक प्रभाव क्षेत्र के निवासी, सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक रूप से सतना नगर से जुड़े हुए हैं जिससे जिले के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि होना स्वाभाविक है। किन्तु इस तरह के क्षेत्र में सम्पूर्ण गतिविधियों के अन्तर्गत थोड़ा अन्तर पाया जाता है। प्रभाव क्षेत्रों के अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि प्रत्येक क्षेत्र की कुछ सामाजिक तथा आर्थिक क्रियाओं का सम्बन्ध नगर से है जिसमें भौगोलिक तत्वों की विशेष भूमिका होती है। क्योकि भौगोलिक संरचना के कारण कच्चे माल की प्राप्ति के लिए आस–पास के निवासी अपने जीविकोपार्जन के साधन जुटाने हेतु नगर में तथा उद्योग धन्धे के कारण नगर के प्रभाव क्षेत्र का विस्तार बढ़ाने में सहयोग प्रदान किया है। इसी प्रकार से रीति रिवाज जो कि हिन्दू समाज की आधारशिला है कि परिणामस्वरूप आसपास के क्षेत्रों के निवासी सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से नगर से सम्बद्ध हैं, जिससे सतना नगर के प्रभाव क्षेत्र में वृद्धि होना स्वाभाविक है।

निष्कर्ष –

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सतना जिले में नगरीकरण की प्रक्रिया ने विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय परिवर्तनों को जन्म दिया है। हालांकि नगरीय विकास के कई सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, लेकिन इसके साथ कई चुनौतियाँ भी उभरी हैं। नगरीकरण ने रोजगार के नए अवसर प्रदान किए हैं, जिससे जिले की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ है। औद्योगिकीकरण, व्यापार और सेवा क्षेत्र में वृद्धि ने शहरीकरण की गति को तेज किया है। शहरीकरण के साथ–साथ पानी, बिजली, सड़कें, स्वास्थ्य ओर शिक्षा जैसी बुनियादी सेवाओं में भी सुधार हुआ है, जिससे जीवन स्तर में वृद्धि हुई है। सतना जिले के नगरीय विकास को सुनिश्चित और स्थायी बनाने के लिए स्मार्ट सिटी योजनाओं और टिकाऊ शहरीकरण पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए। इस दिशा में केंद्र और राज्य सरकारों को मिलकर कार्य करना आवश्यक है। शहरीकरण के दौरान पर्यावरणीय संरक्षण और प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए, ताकि सतना का विकास दीर्घकालिक रूप से टिकाऊ हो सके।

संदर्भ –

1. अग्रवाल के.एल. – ''विंध्य क्षेत्र का ऐतिहासिक भूगोल'', वर्ष 1981
2. Census of India 2011 - Satna Development Plan, Town and Country Planning, Bhopal (M.P.).
3. मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ अधिकारी, जिला चिकित्सालय, जिला सतना (म.प्र.)।
4. महाप्रबंधक, जिला एवं उद्योग केन्द्र, जिला सतना (म.प.)।
5. संचालक, आर्थिक एवं सांख्यकी संचालनालय म.प्र., भोपाल (म.प्र.)।
6. जिला सांख्यकीय पुस्तिका, वर्ष 2017, जिला योजना एवं सांख्यकीय कार्यालय सतना।
7. कार्यपालन यंत्री, लोक निर्माण विभाग, जिला सतना (म.प्र.)।
8. अधीक्षक, भू अभिलेख एवं मौसम विज्ञान केन्द्र, जिला सतना (म.प्र.)।
9. जिला खनिज अधिकारी, जिला सतना (म.प्र.)।
10. अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, जिला सतना (म.प्र.)।
11. अधीक्षक, डाक एवं तार तथा उपमण्डल अभियंता, कार्यालय दूरसंचार, जिला सतना (म.प्र.)।
12. उप पंजीयक, सहकारी समितियाँ कार्यालय, जिला सतना (म.प्र.)।
13. लोक स्वास्थ यांत्रिकी कार्यालय, जिला सतना (म.प्र.)।
14. अन्य समाचार पत्र पत्रिकाएँ–दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, देशबन्धु, पत्रिका, नवस्वदेश से समय–समय पर प्रकाशित लेख।